समाजशास्त्र
एक समग्र अध्ययन

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

समाजशास्त्र
एक समग्र अध्ययन

बालक राम राजवंशी

नमूना • SAMPLE

ADHYAYAN
अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
नई दिल्ली (भारत)

अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
4378/4B, 105, जे. एम. डी.हाउस, मुरारी लाल स्ट्रीट,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
फोन : 011–23263018, 011–23277156,
ई–मेल : adhyayanpublishers@yahoo.com

समाजशास्त्र
एक समग्र अध्ययन

द्वितीय संस्करण : 2018
© लेखक
ISBN: 978-81-8435-502-4

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं। जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

राकेश कुमार यादव 'अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE

आमुख एवं आभार

समाजशास्त्र एक नवीन सामाजिक विज्ञान है। विगत कुछ वर्षों में समाजशास्त्र विषय की लोकप्रियता बढ़ी है। प्रस्तुत पुस्तक में समाजशास्त्र की मौलिक अवधारणाओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। अवधारणाओं का चयन इस प्रकार किया गया है कि यह समाजशास्त्र के विश्वविद्यालय स्तर के पाठकों के साथ–साथ उन पाठकों के लिए, जो ऐच्छिक विषय के रूप में समाजशास्त्र विषय लेकर संघ व राज्य लोक सेवा, यू0जी0सी0 नेट परीक्षा, आयोग की परीक्षा में बैठने के इच्छुक हैं, उपयोगी हो सके। जहाँ तक सम्भव हो सका है, पुस्तक की भाषा सरल व बोधगम्य रखी गयी है।

इस पुस्तक की सामग्री उन प्रमाणिक मूल पुस्तकों पर आधारित है, जो सहज में उपलब्ध है। लेखक उन लेखकों व व्यक्तियों के प्रकाशकों के प्रति आभारी है, जिनकी रचनाओं को इस पुस्तक में समाहित किया गया है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि समाजशास्त्र के छात्रों एवं पाठकों के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक में निहित विषय–वस्तु को मैंने अनेक पश्चिमी एवं भारतीय समाजशास्त्रियों की लेखनी को ध्यान में रखकर सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जिससे विद्यार्थी एवं पाठक अधिक से अधिक लाभान्वित हो सके।

मैंने यह पुस्तक मौलाना आजाद इन्स्टीयूट ऑफ ह्यूमैनिटीज साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, महमूदाबाद, सीतापुर, (उ0प्र0) तथा हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल, (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, बी0जी0आर0 परिसर पौड़ी (गढ़वाल) में शिक्षण कार्य के दौरान प्राप्त अनुभव एवं भारतीय समाज की संरचना को ध्यान में रखते हुए सम्पादित की है।

SAMPLE

इस पुस्तक की रचना के लिए जिन विद्वानों ने मुझे प्रेरित किया, प्रो0 जे0पी0पचौरी, प्रो0 सुकान्त कुमार चौधरी, प्रो0 राजेश मिश्रा, प्रो0 ए0के0 श्रीवास्तव, प्रो0 रामगणेश यादव,प्रो0 रेहाना ज़ैदी, डॉ0 अखिलेश कुमार शुक्ल, डॉ0 किरन डंगवाल, डॉ0जे0पी0 भट्ट, डॉ0 तनु मित्तल के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मेरे मनोबल को बढ़ाने में सहयोग प्रदान किया है।

इस पुस्तक को सफलतापूर्वक निष्पादन कराने में डॉ0 रवीश कुमार सिंह, डॉ0 अमित कुमार वर्मा, डॉ0सुनील दीपक, डॉ0 राजीव कुमार डॉ0 दिनेश कुमार , डॉ0 राजेश कुमार यादव, डॉ0 दिवाकर उपाध्याय, डॉ0 पी0 के0 गुप्ता, लखनऊ विश्वद्यिालय, लखनऊ का भी समर्थन मिला।

मेरे इस असम्भव कार्य को सम्पादित कराने में मेरी पत्नी श्रीमती पूनम शर्मा एवं पुत्र अराध्य राजवंशी,तथा अग्रज श्री राम प्रसाद,श्री दयाराम,कमलेश कुमार तथा माता श्रीमती नन्हका देवी का अभूतपूर्व योगदान रहा।

पुस्तक में परिवर्तन, संशोधन व परिमार्जन के लिए पाठकों की टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत है ताकि इस पुस्तक को आगामी संस्करण में और अधिक सार्थक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

स्थान–लखनऊ
दिनाँक–12–10–2016

डॉ. बालक राम राजवंशी
643N\139 नायक नगर
मोहिबुल्लापुर सीतापुर
रोड, लखनऊ–21

अनुक्रमणिका

	आमुख एवं आभार	*v*
1.	समाजशास्त्र का उद्‌भव व विकास	1
2.	समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध	24
3.	प्राथमिक अवधारणाएँ	47
4.	प्रस्थिति और भूमिका	144
5.	सामाजिक प्रतिमान	162
6.	सामाजिक संरचना एवं प्रकार्य	177
7.	सामाजिक व्यवस्था	183
8.	समाजीकरण	191
9.	सामाजिक प्रक्रियाएँ	211
10.	सामाजिक परिवर्तन	228
11.	सामाजिक स्तरीकरण	252
12.	सामाजिक नियन्त्रण	266
	सन्दर्भ ग्रन्थ	275

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

1

समाजशास्त्र का उद्‌भव व विकास

एक विषय के रूप में 'समाजशास्त्र' नवीन शब्द है जबकि समाज प्राचीन है। जैसा कि बीरस्टीड ने अपनी पुस्तक 'The Social Order' (1970) में लिखा है कि 'एक विषय के रूप में समाजशास्त्र नवीन है जबकि इसका अतीत काफी प्राचीन या लम्बा है। समाजशास्त्र विषय के पूर्व भी समाज के विभिन्न पहलूओं का अध्ययन विभिन्न शास्त्रों यथा– राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र इत्यादि द्वारा किया जाता था।

किसी युग की सामाजिक परिस्थितियों तथा तात्कालिक विचारों के बीच सदैव सम्बन्ध हुआ करता है। इन विचारों की उस समय में प्रधानता होती है। जैसी कि हम जानते है कि समाजशास्त्र का उदय यूरोप महाद्वीप में हुआ है। इसलिए हमें उस समय विद्यमान यूरोपीय सामाजिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिऐ। प्रारम्भिक समाजशास्त्रियों द्वारा विकसित विचारों की जड़ें उन सामाजिक परिस्थितियों में है, जो उस समय के यूरोप में मौजूद थी। अतः एक वैज्ञानिक विषय के रूप में समाजशास्त्र के उदय के प्रारम्भिक चिन्ह हमें यूरोपीय इतिहास के उस काल में तलाशने होगें, जिसमें *फ्राँसीसी क्राँन्ति (1789) तथा औद्योगिक क्राँन्ति (1760)* के रूप में इतने व्यापक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन हुए।

यूरोपीय समाज में परिवर्तन का यह युग *प्रबोधन युग* (Enlightenment Period) के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इसमें 18वीं शताब्दी के फ्राँसीसी दार्शनिकों की चेतना को निश्चित रूप से व्यक्त किया गया है। प्रबोधन युग

SAMPLE

में सामंतवादी यूरोप के परम्परागत चिंतन में क्राँन्तिकारी परिवर्तन आया, इससे यथार्थ की नयी दृष्टि और उसके चिंतन के नये तरीकों ने जन्म लिया। लोग जीवन के हर पहलू पर तार्किक चिंतन करने लगे तथा इस समय धर्म, सरकार या राजा की कही बात को अन्तिम सत्य मानने की प्रवृत्ति समाप्त होने लगी। यूरोपीय समाज में हो रहे सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए सबसे पहले हमें उस समाज का अध्ययन करना होगा, जो परम्परागत यूरोप में अर्थात् प्रबोधन युग के पूर्व वहाँ मौजूद था।

प्राचीन यूरोप का परंपरावादी स्वरूप था। उसकी आर्थिक व्यवस्था में भूमि को केन्द्रीय स्थान प्राप्त था। सामंत भूमि के मालिक थे और किसान भूमि पर काम करते थे। समाज दो वर्गों में बँटा था और उनका विभाजन एकदम स्पष्ट था। धर्मगुरू जैसे पादरी ही तय करते थे कि क्या नैतिक है और क्या नहीं। परिवार तथा नातेदारी सम्बन्धों का मानव जीवन में अति महत्वपूर्ण स्थान था। राजतन्त्र की जड़ें समाज में बहुत गहरी जमी हुई थी। ऐसी मान्यता थी कि राजा को ईश्वर ने लोगों पर शासन करने के लिए भेजा है।

फ्राँसीसी क्राँन्ति तथा औद्योगिक क्राँन्ति के फलस्वरूप जो नया यूरोप उभर कर सामने आया, उसने प्राचीन यूरोप के हर मुख्य पहलू को चुनौती दी। फलस्वरूप सभी वर्गों का पुनर्गठन हुआ। पूराने वर्ग ध्वस्त हो गये तथा नये वर्गों ने जन्म लिया। धर्म को चुनौती दी जाने लगी, धर्म का महत्व पहले से कम हो गया। पारिवारिक निष्ठाओं का स्थान वैचारिक आस्थाओं ने ले लिया। महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया। अन्ततः राजतन्त्र की समाप्ति हुई और लोकतन्त्र का आगमन हुआ। समाज की सभी धारणाओं– धर्म, समुदाय, सत्ता, सम्पत्ति आदि की नयी व्याख्याएँ होने लगी और उन्हें नये सन्दर्भ मिलने लगे। वर्तमान तथा अतीत के बीच अन्तर एकदम स्पष्ट हो गया। यूरोप में हो रहे इन परिवर्तनों का महत्व हम कितना भी आंके, वह कम होगा।

पूर्व यूरोप में दो और क्राँन्तियाँ हुई थी जिसे हम वाणिज्यिक क्राँति (सन् 1450 से लगभग सन् 1800) एवं वैज्ञानिक क्राँति के नाम से जानते है। यूरोप में इन्हीं दो क्राँन्तियों का काल 'पुनर्जागरण काल' (Renaissance) कहलाता है। इस युग में कला, साहित्य, संगीत, विज्ञान, मूर्तिकला आदि सभी विषयों को नया जीवन मिला। पुनर्जागरण युग ने समाज में परिवर्तन की शुरूआत की जबकि फ्राँसीसी क्राँन्ति तथा औद्योगिक क्राँन्ति ने उसको परिणति तक

पहुँचाया। एक पृथक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र का उदय उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। यूरोप उस समय फ्राँसीसी तथा औद्योगिक क्राँतियों के कारण अनन्त परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा था। इस प्रकार समाजशास्त्र के उदय में हम दो ही कारणों को मुख्य मानते है, अर्थात् उत्तरदायी ठहरा सकते हैं, पहला फ्राँसीसी क्राँन्ति (1789), तथा दूसरा औद्योगिक क्राँन्ति (1760)

फ्राँसीसी क्राँन्ति – सन् 1789 में हुई फ्राँसीसी क्राँन्ति स्वतन्त्रता तथा समानता के लिए मानव संघर्ष के इतिहास को मोड़ देने वाली घटना सिद्ध हुई। इस क्राँन्ति ने सामन्तवाद के युग को समाप्त करके नयी समाज व्यवस्था का सूत्रपात किया। इस क्राँति के उपजे विचारों से पूरी दुनिया के देश प्रभावित हुए। स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व जैसा विचार जो हमारे संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित है, फ्राँसीसी क्राँन्ति की देन है।

फ्राँसीसी समाज का बुनियाद स्वरूप फ्राँसीसी समाज सामन्तवादी सम्पत्ति समूहों (Estate Groups) में बँटा हुआ था। समान्तवादी फ्राँसीसी समाज के तीन एस्टेट थी, जिन्हें कानूनी मान्यता प्राप्त थी, यह मध्यकालीन यूरोप की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी।

प्रथम सम्पत्ति समूह– इसमें भूस्वामी, जमींदार, सामन्त, सरदार इत्यादि सम्मिलित थे जिनका भूमि पर अधिकार था, जिसके एवज में सम्पत्ति प्राप्त करते थे।

द्वितीय सम्पत्ति समूह– इसमें धार्मिक नेता शामिल थे जैसे– पादरी, बिशप। यह सर्वाधिक लोगों का समूह था, जो कुछ करता नहीं था लेकिन सर्वाधिक प्राप्त करता था।

तृतीय सम्पत्ति समूह– इसमें समाज के शेष लोग शामिल थे जैसे– किसान, व्यापारी, कारीगर, नौकरी पेशा लोग। यह समाज का रीढ़ था लेकिन सर्वाधिक शोषित वर्ग था। यह उपज का कुछ अंश ही प्राप्त करता था तथा हमेशा अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए विवश था। इन तीन सम्पत्ति समूहों अलावा एक और समूह–अर्द्धदास (Serf Estate or Serfdom) का भी था। कहा जाता है कि क्राँन्ति के पूर्व फ्राँन्स में अमीर लड़ते थे, पुजारी पूजा करते थे और जनसाधारण (दास) उनका खर्च जुटाते थे। फ्राँसीसी समाज के राजनीतिक पहलू : फ्रान्स में राजतन्त्र विद्यमान था। राजा को शासन करने

का दैवीय अधिकार मिला था। लगभग 200 वर्षों तक फ्राँस पर बोर्बन राजवंश ने शासन किया।

फ्राँसीसी समाज के आर्थिक पहलू : बोर्बन राजवंश के शासक लुई 14वें के शासनकाल से ही फ्राँस के राजाओं ने कई लड़ाईयाँ लड़ी, जिनमें काफी धन व्यर्थ हुआ। 1715 ई0 में लुई 14वें की मृत्यु के समय फ्राँस की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो चुकी थी। लुई 15वाँ हालात में सुधार लाने के बजाए महाजनों से ऋण लेकर काम चलाने लगा। फ्राँस उस समय कितने गहरे संकट से गुजर रहा था, इसकी व्याख्या लुई 15वें के मशहूर कथन 'मेरे बाद प्रलय' से स्पष्ट हो जाती है। लुई 16वाँ एकदम कमजोर तथा प्रभावहीन राजा था, जिसे फ्राँस की दिवालिया सरकार विरासत में मिली थी। उसकी पत्नी महारानी आन्तोनेत अपनी फिजूलखर्ची के साथ–साथ एक इतिहास प्रसिद्ध वाक्य के लिए भी जानी जाती है। यह वाक्य उसने फ्राँस की भूखी जनता के सामने तब बोला था जब वह खाना माँगने महल के बाहर इकट्ठी हुई थी। महारानी ने कहा था– 'यदि तुम्हारे पास ब्रेड (रोटी) नहीं है तो केक खा लो।'

मांटेस्क्यू ने अपनी पुस्तक 'The spirit of Laws (1748) में यह विचार व्यक्त किया कि प्रशासनिक, विधायी और न्यायिक सत्ता का एक स्थान पर केन्द्रीयकरण नहीं होना चाहिए। वह अधिकारों के पृथक्करण के सिद्धान्त और व्यक्ति की स्वतन्त्रता के पक्ष में था।

ब्रिटिश दार्शनिक लॉक की मान्यता थी कि प्रत्येक व्यक्ति के कुछ अधिकार है, जो किसी भी सत्ता द्वारा हथियाए नहीं जा सकते। ये अधिकार है–जीवन का अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार और व्यक्ति व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अधिकार। आपका यह मत है कि जो शासक अपनी जनता को इन अधिकारों से वंचित करें उसे हटा दिया जाना चाहिए और उसके स्थान पर ऐसे शासक को सत्ता सौंपी जानी चाहिए, जो अधिकारों की रक्षा करने में समर्थ हो।

फ्राँसीसी दार्शनिक वाल्टेयर ने धार्मिक सहिष्णुता और बोलने की स्वतन्त्रता अर्थात् 'Freedom of Speech' का समर्थन किया। वह व्यक्तियों के बोलने तथा अभिव्यक्ति के अधिकारों के पक्ष में था।

फ्राँसीसी दार्शनिक रूसो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'The Social Contact'

(1762) में लिखा है कि किसी देश की जनता को अपना शासक चुनने का अधिकार है। उसका विश्वास था कि लोगों के व्यक्तित्व का विकास तभी सम्भव है जब उनकी पसन्द की सरकार हो।

इन विद्वानों के विचारों ने फ्राँसीसीयों की मानसिकता को झकझोर दिया। इसके अलावा जो फ्राँसीसी लोग ब्रिटिश सम्राज्यवाद के खिलाफ स्वतन्त्रता की लड़ाई में अमेरिका की सहायता के लिए भेजी गयी फ्राँसीसी फौज में शामिल थे, वे अमेरिका से समानता तथा अपनी सरकार स्वंय चुनने के अधिकार का विचार लेकर स्वदेश लौटे थे।

औद्योगिक क्राँन्ति – औद्योगिक क्राँन्ति सन् 1760 के आस पास ब्रिटेन में प्रारम्भ हुई। इसने कपास (Cotten) तथा खनन (Mining) को प्रभावित किया। इसमें पहले इंग्लैण्ड फिर अन्य यूरोपीय देशों तथा बाद में अन्य महाद्वीपों में भी लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में जर्बदस्त बदलाव आया। यूरोप में विशेषकर, इंग्लैण्ड द्वारा नए क्षेत्रों की खोज व इसके साथ–साथ व्यापार व वाणिज्य में वृद्धि तथा इसके फलस्वरूप शहरों व विकास के कारण चीजों की माँग बढ़ने लगी। कपडा जैसे परम्परागत उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण पहले घरेलू स्तर पर होता था, उत्पादन की घरेलू परम्परा प्रचलित थी।

औद्योगिक क्राँन्ति के दौरान नए औजारों तथा नयी तकनीकों का विकास हुआ जिनसे व्यापक पैमाने पर वस्तुएँ तैयार हो सकती थी। 1760 से 1830 के बीच औजारों, तकनीकों और उत्पादन के प्रबन्ध में कई नए आविष्कार हुए जिनसे उत्पादन की फैक्ट्री प्रणाली अस्तित्व में आई। इस प्रकार उत्पादन की सामंतवादी प्रणाली के स्थान पर पूँजीवादी प्रणाली विकसित हुई। उपर्युक्त घटनाओं के परिणामस्वरूप फ्राँसीसी समाज परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था, कोई भी व्यवस्था स्थायित्व को नहीं प्राप्त कर पा रही थी, समाज अनेक समस्याओं का सामना कर रहा था, तत्कालीन विद्वानों द्वारा सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा था। समाज में विज्ञान का महत्त्व सर्वाधिक था और सामाजिक समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक ढंग से करने पर बल था। इन विद्वानों में सेंट साइमन (1970–1825) अग्रणी थे, जिन्होंने समाज के अध्ययन के लिए एक अलग विषय 'सामाजिक जीव विज्ञान' (Social Biology) का उल्लेख किया। औद्योगिक क्राँन्ति ने जिस नये समाज को जन्म दिया उसे सेंट साइमन 'औद्योगिक

समाज' (Industrial Society) कहा। जब फ्राँसीसी क्राँन्ति से समाज में उबाल आ रहा था, उसी बीच 19 जनवरी 1798 को आगस्त कोंत का जन्म हुआ। उस समय ऐसी बहुत घटनाएँ घटित हो रही थी जिन्होंने आधुनिक विश्व की नींव रखने का काम किया था। **रेसिडोर ऑगस्त मैरी फ्रैंकोइज जेवियर कोंत** फ्राँसीसी क्राँन्ति द्वारा हुए सामाजिक विनाश से भी प्रभावित हुआ था।

सेंट साइमन, जो आगस्त कोंत का गुरू भी था, उसके सचिव के रूप में कोंत ने समाज की स्थिरता के लिए मिलकर कार्य करना प्रारंभ किया। दोनों ने मिलकर 1822 ई0 में एक पुस्तक की रचना की जिसका नाम 'Plan of the Scientific operations Neceasary for the reorganization of Society' था, जिसमें समाज के अध्ययन की रूपरेखा को प्रस्तुत किया गया था। लेकिन दुर्भाग्यवश साइमन तथा कोंत की दोस्ती ज्यादा समय तक नहीं चल पायी तथा दोनों के बीच सन् 1824 में विच्छेद हो गया। तत्पश्चात् कोंट द्वारा अकेले ही प्रयास किया जाता रहा। सन् 1838 में सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिए 'सामाजिक भौतिकी' (Social Physics) का प्रयोग किया गया, लेकिन यह शब्द बेल्जियम के वैज्ञानिक **एडोल्फ क्वेटलेट** द्वारा पूर्व में प्रयोग किया गया था। जिसके पश्चात् कोंत ने एक नवीन शब्द 'समाजशास्त्र' (Sociology) की रचना सन् 1838 में ही किया। यह लैटिन तथा ग्रीक दो भिन्न शब्दों के मिलने से बना था। जिस पर 'जान स्टुआर्ट मिल' ने आपत्ति प्रकट करते हुए कहा कि समाजशास्त्र दो भिन्न भाषाओं की अवैध सन्तान है। मिल द्वारा समाजशास्त्र के स्थान पर 'नीतिशास्त्र' (Ethology) शब्द का प्रयोग किया गया जिसे विद्वानों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। इस प्रकार एक नये विषय 'समाजशास्त्र' का उद्भव तात्कालीन परिस्थितियों का परिणाम है। काम्ट को समाजशास्त्र का जनक माना जाता है क्योंकि यह शब्द इन्हीं के द्वारा गढ़ा तथा सर्वप्रथम प्रयोग किया गया था। कोंत के शब्दों में, **'समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था** (Social Order) **व प्रगति** (Social Progress) **का विज्ञान है।**

इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था के स्थायित्व के लिए कोंट द्वारा 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध अर्थात् 1838ई0 में एक नये विषय समाजशास्त्र की स्थापना की गयी। कोंत द्वारा विज्ञानों का संस्तरण (Hierarchy of Sciences) भी प्रस्तुत किया गया जिसमें उन्होंने गणितशास्त्र को प्रथम तथा समाजशास्त्र को अन्तिम स्थान दिया है, और समाजशास्त्र को **'सभी विज्ञानों की**

महारानी' कहा है। अतः समाजशास्त्र के उद्भव के लिए औद्योगिक क्राँति (1760) तथा फ्राँसीसी क्राँति (1789) को ही तात्कालीक रूप से उत्तरादायी माना जाता है।

समाजशास्त्र विषय का विकास

एक विषय के रूप में समाजशास्त्र का उद्भव 1838 ई0 में फ्राँस में हुआ था लेकिन इसका सर्वाधिक वैज्ञानिक विकास तथा इसको उर्वरता अमेरिका में प्राप्त हुई। जन्म के 38 वर्ष पश्चात् सन् 1876 में अमेरिका के एल विश्वविद्यालय में ग्राहम विलियम समनर (1840–1910) के नेतृत्व में अध्ययन की शुरूआत हुई। इसलिए समनर को समाजशास्त्र विषय का अकादमिक जनक माना जाता है। समनर द्वारा 1906 में एक पुस्तक 'Folkways' की रचना की गयी जिसमें संस्था के उद्विकास को चित्रित किया गया है। 'Folkways' पुस्तक को समाजशास्त्र की धर्म पुस्तक (Old Testament of Sociology) कहा जाता है। समनर ने कैलर के साथ मिलकर 'Science of Society' (4 vols.) नामक एक अन्य महत्वपूर्ण पुस्तक की रचना की।

तत्पश्चात् दुर्खीम के नेतृत्व में 1889 में फ्राँस के बोर्डिक्स विश्वविद्यालय में इस विषय के अध्ययन की शुरूआत हुई। दुर्खीम को समाजशास्त्र का प्रथम प्रोफेसर कहा जाता है।

सन् 1892 ई0 में अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में ए0 डब्ल्यू0 स्माल (1854–1926) के नेतृत्व में समाजशास्त्र विषय के अध्ययन की शुरूआत हुई। स्माल द्वारा शिकागो सम्प्रदाय (Chicago School) की स्थापना की गयी। ए0 डब्ल्यू0 स्माल द्वारा सन् 1895 में 'अमेरीकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी' की स्थापना की गई। सन् 1906 में स्माल द्वारा लेस्टर फ्रैंक वार्ड (1841–1913) के साथ मिलकर 'अमेरीकन समाज–शास्त्रीय परिषद्' (American Sociological Society) की स्थापना की गयी। तथा वार्ड इसके प्रथम अध्यक्ष एवं स्माल प्रथम उपाध्यक्ष बने। पुनः वार्ड के कार्यमुक्त होने पर स्माल ने अध्यक्ष के पद को सुशोभित किया।

(i) शिकागो सम्प्रदाय (Chicago School) : अमेरिका में सर्वप्रथम 1892 ई0 में शिकागो विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना हुई। इस विभाग द्वारा अध्ययन, अध्यापन एवं शोध की जो परम्परा विकसित की गयी, वही कालान्तर में समाजशास्त्रीय जगत में शिकागो

सम्प्रदाय के नाम से सुप्रसिद्ध हुई। शिकागो सम्प्रदाय ने विशेषतः नगरीय समस्याओं (अपराध, अपचार, गरीबी आदि) के अध्ययन की ओर विशेष ध्यान दिया तथा अध्ययन पद्धति के रूप में पारिस्थितिक (Ecological) तथा नृविज्ञानीय (Ethnographic) विधियों का प्रयोग कर शोध अध्ययनों को नवीन आयाम दिया। बाद में इसी सम्प्रदाय के मूल विचारों के आधार पर **'अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य'** का विकास हुआ। इस सम्प्रदाय के संस्थापक एलिवन स्माल रहे हैं। इस सम्प्रदाय से जुड़े अन्य विद्वानों में पार्क, बर्गेस, मीड, कूले, थॉमस, मैकेन्जी, लुई विर्थ, नैनकी, फैरिस, ब्लूमर आदि प्रमुख है।

(ii) फ्रैंकफुर्ट सम्प्रदाय (Frankfurt School) : पश्चिमी जर्मनी के फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय के अंतर्गत सन् 1923 में एक सामाजिक अनुसन्धान संस्थान की स्थापना की गयी थी। इस संस्थान ने सामाजिक जीवन के क्षेत्र में शोध कार्य के जिस वैचारिक प्रतिरूप और रूपांकन का प्रतिपादन किया, वहीं बाद में फ्रैंकफर्ट सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह सम्प्रदाय मुख्य रूप से मार्क्सवादी चिंतन से प्रभावित था। जो मार्क्सवादी विचारधारा के आधार पर तत्कालीन विश्व के बदलते हुए परिवेश की व्याख्या में संलग्न था। इस सम्प्रदाय के अग्रणी विचारकों में टी0 डब्लू0 बेंजामिन, ई0 फ्रॉम, एम0 होरखीमर और हरबर्ट मारक्यूज का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

भारत में समाजशास्त्र की वास्तविक शुरूआत 1914 में बम्बई विश्वविद्यालय में हुई। उस समय इसकी पढ़ाई अर्थशास्त्र के साथ एक ऐच्छिक प्रश्न–पत्र के रूप में की गयी। वहाँ 1919 में नागरिकशास्त्र के साथ समाजशास्त्र का एक संयुक्त विभाग स्थापित किया गया और पैट्रिक गेड्स (Patrics Geddes), जो एक नगरीय समाजशास्त्री थे, इसके प्रथम अध्यक्ष बने। बाद में इस विभाग से जी0 एस0 घुर्ये (G.S. Ghurye) एवं के0 एम0 कपाड़िया (K.M. Kapadia) जैसे लोग जुड़े। पर वे लोग बुनियादी रूप से मानवशास्त्री ही थे, उनका प्रशिक्षण इंग्लैंड के मानवशास्त्र के क्षेत्र में ही हुआ था। गिड्स के पश्चात् बम्बई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की जिम्मेदारी प्रो0 जी0 एस0 धुर्ये0 (1893–1983) ने सम्भाला। सन् 1952 में बम्बई में धुर्ये द्वारा **'भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद्'** (Indian Sociological Society) की स्थापना की गयी, जिससे Sociological Bulletin नामक पत्रिका (Journal) प्रकाशित